प्र थ म अ ध्या य

शिवानी : व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रथम अध्याय

शिवानी : व्यक्तित्व और कृतित्व

अपनी लेखन शैली की विशिष्टता को लेकर शिवानी अपने सभी समकालीन लेखकों से अलग और महत्वपूर्ण स्थान रखती है। गंभीर, साहित्यिक लेखन को लोकप्रियता प्रदान करने वाले साहित्यकारों में अग्रणी नाम है शिवानी, जिनकी कहानियों, उपन्यासों, संस्मरणों और रेखाचित्रों में ऐसे - ऐसे सजीव चरित्र चित्रित हुए है, जो न केवल पाठकों का मन छू लेते है, बल्कि हिंदी साहित्य की भी अनमोल धरोहर बन गए है।

व्यक्तित्व --

किसी के व्यक्तित्व की पहचान के लिए उस व्यक्ति की पहचान आवश्यक है। हम जब किसी व्यक्ति के संपर्क में पहली बार आते हैं, तब उसके रंग-रूप, उसकी पोशाक आदि से प्रभावित होते है। अर्थात् प्रथम दर्शन में व्यक्ति के स्थूल रूप और बाहरी व्यक्तित्व से परिचित होते हैं और जब उस व्यक्ति के संपर्क में बार-बार आते हैं, तब हम उसके गुण एवं दोषों से प्रभावित होते हैं, जिसे उसका अंतरंग व्यक्तित्व कह सकते है। इस प्रकार किसी व्यक्ति को पहचानने के दो पहलू हैं -- एक बाहरी (भौतिक - स्थूल), दूसरा आंतरिक (आत्मिक-सूक्ष्म)।

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना कठिन कार्य है और किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति के व्यक्तित्व का चित्रण करना तो, लगभग असंभव है।

मारतीय चिंतन की सनातन समस्या है -

को हम् - मै कौन हूँ ?
कुत्र हम् - मै कहा हूँ ?
कस्मात् अहम् - मै कहाँ से आया हूँ ?

मनुष्य अपने आप को पहचान नहीं पाता, वहाँ किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति के व्यक्तित्व का चित्रण करना संभव है ? इस असंभव को संभव कर सकने का प्रयास है यह। सब से पहले व्यक्ति जन्म-कुल से पहचाना जाता है। फिर उसके परिवेश से। कुछ प्रतिमा संपन्न व्यक्ति ऐसे भी होते है, जिन्हें परिवेश से प्रेरणा अथवा अनुकूलता नहीं प्राप्त होती। फिर भी वे अपनी असामान्य प्रतिमा से विश्व में अपनी साख जमा लेते हैं।

किसी विद्वान ने एक स्थान पर कहा है कि सफलता के लिए एक प्रतिशत प्रेरणा और निन्यानबे प्रतिशत पसीने की आवश्यक्ता होती है। लेखक बनने के लिए प्रतिभा के साथ-साथ इसी अनुपात से साधना और श्रम अपेक्षित है। आम आदमी की उत्सुकता होती है कि किसी कहानी का लेखक कैसा है ? कहां रहता है ? कहानी वास्तविक है या काल्पनिक। परिवेश कैसा है ? संदर्भ किस प्रकार का है आदि। शिवानी की कहानियों को पढ़ने के पश्चात् लेखिका का एक विशिष्ट रुप हमारे मन में उभारता है, तब मन में यह प्रश्न उठता है कि वास्तव में लेखिका का रुप ऐसा ही है ?

नारी-जीवन, नारी-मन तथा उसकी अनंत पर्तें उघाडने की जिस नारी ने जबरदस्त कोशिश की है, उसका व्यक्तित्व कैसा है मुझे यह जानना आवश्यक लगा। अथक परिश्रम के बावजूद [illegible] ।

जन्म --

शिवानी का जन्म एक अत्यंत समृध्द, सुसंस्कृत एवं उच्चवर्गीय परिवार में राजकोट (सौराष्ट्र) में १७ अक्तूबर, १९२३ को प्रात:काल के समय हुआ।

पिता --

शिवानी के पिता श्री अश्विनीकुमार पाण्डे अत्यंत विद्वान एवं सहृदय व्यक्ति थे। शिवानी के जन्म के समय वे राजकोट के राजकुमार कॉलेज में कई राजकुमारों के गार्जियन ट्यूटर थे। शिवानी के पिताजी अपनी विदेश की शिक्षा, रोबीले व्यक्तित्व और कठोर अनुशासन के कारण प्रिन्सवर्ग में बहुत जनप्रिय थे। उन दिनों कुछ राजकुमारों को पब्लिक स्कूल की भाँति एक हाउस-मास्टर के अनुशासन में रहना पड़ता था। मांणावदर, रामपुर, जूनागढ़, मैसूर, जसदन, ओरछा, दतिया आदि के अनेक राजकुमार उनके छात्र थे। दतिया के राजकुमार, जिन्हें पिताजी प्यार से बुलबुल पुकारते थे, कई वर्षोंतक उनके परिवार में गृह-सदस्य के रूप में माँ के साथ रहे। बड़े होने पर पिताजी के ये सारे राजपुत्र छात्र, राजा बने और सब ने गुरु का स्मरण किया।

सबसे पहले अश्विनीकुमार पाण्डे जी की नियुक्ति मांणावदर के नबाब के यहाँ उच्च पद पर हुई। मांणावदर रहने के पश्चात उनकी नियुक्ति रामपुर में गृहमंत्री के पद पर हुई। अश्विनीकुमार जी के पिताजी (शिवानी के पितामह) की इच्छा यह थी कि वे राजकोट ही रहें, किन्तु उनका आदेश मिलने से पूर्व सब परिवार राजकोट आ गया था।

श्री अश्विनीकुमार पाण्डेजी अपने आतिथ्य के लिए प्रसिध्द थे। अंग्रेज कलेक्टर-कमिश्नरों के साथ-साथ डॉ. वहीदी, डॉ. कुरेशी, सर गिरजाशंकर वाजपेयी, सर सुल्तान अहमद सभी उनके विशेष मित्रों में से थे।

चौबीस वर्ष की पुत्री और जवान जामाता की नैनीताल के ताल में डूब जाने से मृत्यु के धक्के से शिवानी के पिताजी शोक-विह्वल हो उठे। तब वे ओरछा के दीवान पद नियुक्त हुए थे। उसके बाद कुमायूं के मोह की बेड़ियों को काट कर सारा परिवार बेंगलोर चला गया। वहाँ महर्षि रमण के साथ पिताजी (पाण्डेजी) कुछ दिन रहे, फिर बहुत बड़े परिवार की चिन्ता से उनको नौकरी करनी पड़ी। कुछ वर्ष तक वहीं वॉर सेक्रेटरी के पद पर रहे, वही सिलोन यात्रा में उन्हें कारबंकल हुआ। सेण्ट मार्था अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गयी और सारा परिवार फिर

कुमायूं लौट आया ।

माता --

शिवानी की माँ लीलावती पाण्डे बहुत पढी-लिखी,महान् विदुषी थीं और उनके घर में ही हिन्दी,संस्कृत पुस्तकों के साथ-साथ गुजराती पुस्तकों का भण्डार नित्य नवीन रहता था । मुंशी, मेघाणी, उनके प्रिय लेखक थे । धर्म के प्रति उनकी गहरी आस्था थी । महिलाओं की शिक्षा के प्रति भी उनके मन में बडा उत्साह था । लखनऊ का कॉलिज बनाने में उनका बहुत बडा योगदान था ।

पितामह --

शिवानी के पितामह,काशी विश्वविद्यालय में धर्म-प्रचारक के पद पर थे । वे कुमाऊँ के पहले ग्रेज्युएट थे, साथ ही संस्कृत के धुरन्धर विद्वान और एक दबंग वकील भी थे । मदनमोहन मालवीय जी उनके अन्तरंग मित्र थे । अल्मोडा में दादा-दादी जी रहते थे ।

नाना-नानी--

शिवानी के नाना डॉ.हरदत्त पन्त लखनऊ के तत्कालीन ख्याति प्राप्त सिविल सर्जन थे । उस वक्त उनके नाना ने एक छोटी-सी झोपडी में अपनी प्रॅक्टिस शुरु की थी, कालांतर में उस झोपडी ने अस्पताल का रुप ले लिया, जो आज भी बलरामपुर अस्पताल के नाम से सुविदित है ।

लखनऊ के सामाजिक जीवन में नाना की तरह नानी भी सुप्रसिध्द और बहुचर्चित थी । कुमाऊं समाज की दाग बेल उन्हीं ने डाली थीं ।

परनाना --

कुमायूं के प्रसिध्द गुमानी कवि शिवानी के परनाना थे । कूर्मांचल की

रहस्यमयी पावन मसिधारा में लेखनी डुबोने का लोभ-संवरण करना किसी भी कुमाउंनी के लिए संभव नहीं है।

भाई-बहन --

शिवानी के भाई-बहनों की संख्या तीन है। दो भाई तथा एक बड़ी बहन है।

भाई --

शिवानी तथा उनके भाई-बहनों का बचपन रियासती वातावरण के कारण बड़े ही ऐशो आराम से बीता। बड़े भाई के लिए नैनीताल में एक बँगला ले दिया गया था, वहीं एक अंग्रेज गवर्नेस मिस ममफर्ड की देख रेख में उनकी शिक्षा चल रही थी। बाद में उन्हें भी बड़ी बहिन जयन्ती के पास शान्तिनिकेतन भेजा गया।

लेखिका ने ' गहरी नींद ' कथा के बारे में लिखते हुए एक जगह कहा है कि -- ' गहरी नींद ' मैं ने गाजीपुर में लिखी थी, जहाँ मेरे बड़े भाई एस.पी.थे। कहानी का नायक रवीन्द्र पण्डित है - जो कोरी कल्पना की उपज नहीं था। बल्कि ऐसे ही एक सुदर्शन पुलिस अफसर था, जिसकी पत्नी अत्यन्त सुन्दरी थी, मेरी मित्र थी। उमा यादव (कहानी की नायिका) का सा दुर्भाग्य उसका भी था।'

बड़ी बहन जयन्ती --

शिवानी अपनी बड़ी बहन जयन्ती के साथ मिसेज स्मिथ से पढ़ने नित्य उनके बँगले में जाया करती थीं। पहले जयन्ती को शान्तिनिकेतन भेजा गया। बाद में त्रिभुवन और शिवानी को भी भेजा गया। जयन्ती को सारे आश्रम में आदर्श बालिका माना जाता था। सारे अध्यापक (आ.हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे बुजुर्ग व्यक्ति भी) जयन्ती का बहुत आदर करते थे। जयन्ती और गौरा (शिवानी) दोनों बहनों में ' कारयित्री प्रतिभा ' के बीज दिखाई देते थे। जयन्ती के अनुकरणीय आदर्श व्यवहार एवं अनुशासन के लिए स्वयं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टागोर जी ने उनका नाम रखा था ' भारतमाता '। वे आश्रम की वॉर्डन भी थीं।

शिवानी के भाई बहन अपनी बुध्दिमत्ता, सद्शील आचरण के कारण शान्तिनिकेतन में अत्यंत लोकप्रिय थे।

इसी जयन्ती की चौबीस वर्ष की अल्पायु में अपने पति के साथ नैनीताल के ताल में डूब जाने से मृत्यु हुई। यह सदमा पिताजी अश्विनीकुमार सह नहीं पाये और थोडे ही दिनों बाद उनकी भी मृत्यु हुई।

छोटा भाई राजा --

शिवानी जी का छोटा भाई राजा एक सफल पत्रकार है। उनके बारे में शिवानी जी ने एक घटना बताई है। जब ये सभी बच्चे छोटे थे तब एक बार प्रख्यात पहलवान राममूर्ति उनके घर अतिथि बन कर तीन दिन रहे और उनका नाश्ता देखकर बच्चे स्तब्ध रह गये। एक लोहे की मोटी जंजीर को, जिस से उनकी हथिनी-सी हिसार की भैंस को बाँधा जाता था, उन्होंने अपनी दो ही अंगुलियों में मसलकर, लोहे का गोला बना दिया था। तब शिवानी के छोटे भाई राजा ने कहा तक वे नीम के पेड जड से उखाड कर दतौन किया करते है। शिवानी जी ने भोलेपन से उस बात पर विश्वास कर लिया और एक बार उनसे दतौन क्रिया-प्रदर्शन का अनुरोध किया, तो वे ठठाकर हँस पडे थे " तुम्हारा भाई बहुत बडा गप्पी बनेगा ", उन्होंने कहा था।

सचमुच उनकी भविष्यवाणी सिध्द हुई। वे एक सफल पत्रकार बन चुके है।

गौरा पन्त से शिवानी तक --

शिवानी जी का वास्तविक नाम " गौरा पन्त " है। बचपन में उन्हें घरमें " बिट्टो " कहा करते थे। बाद में " गौरा " शिवानी के नाम से कहानियाँ लिखने लगी। यहाँ आ. हजारीप्रसाद द्विवेजी की " शिवानी की " लाल हवेली " की भूमिका में से एक कथन उद्धृत करेंगे -- " कई वर्ष पहले की बात है। मैं ने शिवानी की एक कहानी कहीं पढी। आज न तो उस पत्रिका का नाम याद आ रहा है, न उस कहानी का पूरा स्मरण है। ... मैं लेखिका के संबंध में अधिक जानने को उत्सुक हुआ, फिर भूल भी गया। ...... एक दिन कुछ कहानियों की कटिंग और एक पत्र मिला। पत्र शिवानी का ही था। मैं आनन्द और वर्ष से

अभिभूत हो उठा । शिवानी और कोई नहीं, गौरा है । गौरा, शान्तिनिकेतन की छोटी-सी मुन्नी, मेरी परमप्रिय बहन और छात्रा । गौरा ही शिवानी के नाम से कहानी लिखने लगी है । [१]

बचपन और शिक्षा --

शिवानी का बचपन रियासती वातावरण के कारण बड़े ही ऐशो-आराम में बीता । जैसा कि हमने पढ़ा कुमाउंनी होने पर भी विधाता ने शिवानी को कुमाऊं में जन्म लेने के सौभाग्य से वंचित रखा । अत: शिवानी कुमाऊं को माता और सौराष्ट्र को मातृवत् धाय माँ मानती है । तब उनके घर में गुजराती बोली जाती थी, बोल फूटते ही शिवानी ने माँ को " बा " कहना सीखा । पहाड़ी रस-भात का स्थान गुजराती खट्टी-मिठ्ठी दाल ने ले लिया था । फिर शिवानी तथा उनके भाई-बहनों की बचपन की उच्चस्तरीय शिक्षा उनके धर्मप्राण पितामह के आदर्शों के विपरीत हुई । शिवानी अपनी बड़ी बहन जयन्ती के साथ मिसेज स्मिथ से पढ़ने नित्य उनके बंगले पर जाया करती थीं । शिवानी को घुड़सवारी सिखाने के लिए बूढ़े सिकन्दर मिर्जा प्रात:काल ६ बजे आते थे । घुड़सवारी में शिवानी इतनी प्रवीण हो गयी थी कि उन्होंने एक दिन कुआँ फाँदने की हर्डल में पिताजी के अभिन्न मित्र के पुत्र " बिशुन भैया " को हरा दिया । इस पर खुश होकर सिकन्दर मिर्जा ने " बिट्टो " का माथा चूम लिया ।

दादाजी के बार-बार आग्रह करने पर बच्चों को अल्मोड़ा भेजा दिया गया । सनातनी पितामह ने बच्चों की शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन कर दिया । पितामह के अनुशासन की कड़ी पकड़ में उन्हें जकड़ दिया गया । सुबह उठते ही संस्कृत के पंडित गंगादत्त जी आ जाते । नित्य उन्हें अमरकोश के पाँच श्लोक कण्ठस्थ कर सुनाने पड़ते । शिवानी के साहित्य में संस्कृत के श्लोक जो यत्र-तत्र बिखरे नजर आते हैं वह इसी का परिणाम है । फिर तीनों भाई-बहनों को लाइन में खड़ा कर

---

१ लाल हवेली - शिवानी - भूमिका - पृ.सं. ।

त्रिफला से आँखें धुलवायी जातीं। शिवानी जी के परिवार के पुराने महाराज लोहनी जी चालीस वर्ष के अनुशासन की लगाम में गृह के अनेक सदस्यों को कसते-कसते दक्ष हो गये थे। जो कोई चींचपड करता उसको हाथ-पैर बाँधकर लकडी की कोठरी में डाल देते, उस पर हफ्ता भर मूली, कद्दू जैसी अरसिक सब्जियाँ खिलाकर बच्चों की नाक में दम कर देते।

सुबह पितामह के साथ घूमने जाना अनिवार्य था। उस वक्त का कुमाउं का अनुपम सृष्टिसौन्दर्य लेखिका के मन में आज भी तरोताजा है। उसके बारे में वह लिखती है ` सद्य:स्नाता कुमाऊँ की अनुपम वनस्थली का वह रूप आज भी मेरी कलम की स्याही जुटाता रहता है। लम्बे चीड, देवदार और अपार वृक्षों से लटकते ओस की बूँदों के मोती-जडे लटकन टप-टप बिखर कर हमें भिगो देते। लौटते तो गिरजे की घण्टियाँ बज रही होतीं। पता नहीं क्यों गिरजे की घण्टियों की जो मिठास, अल्मोडा के गिरजे में है, वह मुझे अन्य कहीं नहीं मिलती। लगता है अल्मोडा का सरल, स्निग्ध सौन्दर्य घण्टे की मिठास में घुल-मिल गया है।`[१]

शिवानी और उनकी बहन ने तिब्बती चरवाहों में दो सुन्दर तिब्बती लडकियों से बहनापा भी जोडा था। उनकी ` नथ ` कहानी की नायिका तिब्बती ` पुट्टी ` का वर्णन इन्हीं तिब्बती लडकियों से मिलता जुलता है।

दादाजी का अल्मोडा का घर बडा था। इस घर की परिक्रमा करने पर पूरा अल्मोडा ही देखा जा सकता था। इस घर की जाली से घिरी बडी खिडकी को उनकी दादी ` रामझरोखा ` कहा करती थी। उस खिडकी पर बैठने से क्या कुछ नहीं दिखाई देता था। पैरों में बेडियाँ डाले, लडखडाते कदमों से रामबाँस काटने जाते खूनी, घोडे पर झूमता पहाड का राजपूत बाँका ` नौशा ` (दूल्हा), डांडी पर बैठी लम्बा घूँघट उठा कर, उघड़ नासिका से नथ की लटकन सँभालती इधर उधर भयत्रस्त विस्फारित दृष्टि से देखती सुघड नवेली दुल्हन, पागल हाथी से चीखते-

---

१ चौदह फेरे - शिवानी - पृ.सं.१० ।

चिघाड़ते नंग - धड़ंग उन्मादग्रस्त अभागे, अर्थी का जुलूस, सब इस रामझरोखे से दिखाई देता था।

तीन-चार वर्ष अल्मोड़ा में दादाजी से शिक्षा प्राप्त कर लेने के पश्चात बच्चों को शान्तिनिकेतन भेज दिया गया। बड़ी बहन जयन्ती और बड़े भाई त्रिभुवन के पास जब गौरा को शान्तिनिकेतन भेज दिया गया, तब उनकी उम्र थी बारह वर्ष। वहाँ पर उन्होंने विधिवत् विद्याभ्यास प्राप्त किया। इतनी छोटी उम्र में भी शिवानी साहित्यिक अभिरुचि और प्रतिभा से सम्पन्न थीं। किन्तु स्वभाव से संकोचशील होने के कारण वे अपने अन्य भाई-बहनों की भाँति शान्तिनिकेतन में लोकप्रियता नहीं बना पाई थीं। इन्हीं दिनों एक घटना ऐसी घटी, जिसने शिवानी की काव्य-प्रतिभा की धाक न केवल शान्तिनिकेतन के छात्रों पर बल्कि अध्यापकों और गुरुदेव के मन पर भी जमा दी।

गुरुदेव ने एक दिन छात्रों की अंग्रेजी आशु कविता के कार्यक्रम का आयोजन किया। समस्या दी --

' इफ आइ वेर ए बाँय '

जब उनका नम्बर आया तो शिवानी ने इस समस्या की पूर्ति इस प्रकार की --

' इफ आई वेर ए बाँय
व्हाट वुड बिकम आँफ दि बाँय
आई लव '

निर्णायक स्वयं गुरुदेव थे। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने शिवानी को प्रथम पुरस्कार दिया, जो शिवानी के लिए ' नोबल पुरस्कार ' से कम न था। उसी क्षण शिवानी शान्तिनिकेतन में लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच गईं। जिधर से निकलती, सहपाठी कहते ---

' हे, हू इज द लकी वन '। ' [१]

---

१ जालक - शिवानी - पृ.सं.१९० ।

शान्तिनिकेतन में बड़े से बड़े विद्वानों से शिक्षा पाने का सौभाग्य शिवानी को प्राप्त हुआ। हिन्दी भाषा एवं साहित्य की शिक्षा उन्होंने हिन्दी के मूर्धन्य, शीर्षस्थ विद्वान आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी से प्राप्त की। शिवानी ने कहा है कि उन्होंने ही मुझे मेरे कान पकड़कर लेखनी की सही पकड़ सिखायी। शिवानी के अध्यापकों में सुप्रसिध्द सिने कलाकार बलराज सहानी भी थे। नृत्य शिक्षक थे शान्ति दा तथा मृणालिनी स्वामीनाथन (अब मृणालिनी साराभाई)। सत्यजित रे जैसे सिने दिग्दर्शक उनके सहपाठी रहे। शान्तिनिकेतन में ही उन्होंने रवीन्द्र और हिन्दुस्तानी संगीत भी विधिवत् सीखा।

शिवानी को खेलों के प्रति रुचि कभी नहीं रही। उनकी रचनाओं में शायद ही किसी खेल या खिलाड़ी का वर्णन आता है।

आठ वर्ष तक केवल ग्रीष्मावकाश में सब बच्चे पहाड़ अल्मोड़ा आते थे। शिवानी के पिताजी ने शान्तिनिकेतन के अतिथियों के लिए अल्मोड़ा में एक छोटी-सी अतिथिशाला भी बनवा दी थी, प्राय: ही त्रिभुवन भाई के विदेशी मित्र, बहन जयंती की सीलोनी, चीनी सखियाँ और शान्तिनिकेतन के अध्यापक आते रहते। उनके साथ भाई-बहनों ने पहाड़ का चप्पा चप्पा छान डाला। पहाड़ के ग्रामों का सौन्दर्य, मंदिरों का वैभव एक नये रुप में देखने का अवसर उन्हें प्राप्त हुआ।

तभी जयन्ती और उसके पति मृत्यु को प्राप्त हुए। सारा परिवार बेंगलोर चला गया। पिताजी की सिलोन में मृत्यु हुई, फिर बचपन की रम्य स्मृति के बारे में लेखिका ने कहा है -- ' शान्तिनिकेतन की आठ सुदीर्घ वर्षों की स्मृति, रामपुर, ओरछा का रियासती वैभव, सौराष्ट्र की रसधार और दक्षिण का सरल अभिनव सौन्दर्य। ' इनके साथ-साथ कुमाऊँ से बार-बार मिलने का आनन्द और विछोह की व्यथा, कैसा बहुरंगी मूलधन है। इन अनमोल मोतियों से छलकते अमृत-कलश से, कितने ही अच्छे कथानक। निकाल सकती हूँ। यह कभी रीता नहीं होगा। ' [१]

---

१ चौदह फेरे की भूमिका मे - शिवानी - पृ.सं.१२।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

विवाह --

शिवानी जब बी.ए. में थी तभी उनके माता-पिता ने उनका विवाह तय कर दिया । शिवानी ने अपने होने वाले पति को विवाह से पूर्व देखा भी नहीं था । उन्हें अपने माता-पिता पर इतना विश्वास था और यह विश्वास गलत नहीं था । शिवानी और श्रीयुत पन्त इन दोनों का वैवाहिक जीवन सफल रहा । यहाँ पर शिवानी के रूप में परंपरागत हिंदू स्त्री के दर्शन होते हैं । अपने पति के बारे में वे लिखती हैं -- `फिर भी उनकी अंतिम साँस तक मुझे संतोष रहा कि शायद `लव मेरिज` करती तो भी इतना अच्छा पति नहीं मिलता ।`[१]

शिवानी के पति एक उच्च पदाधिकारी थे । वे अच्छे जादूगर भी थे । कुछ वर्ष पूर्व उनके पति का देहांत हो गया । `रथ्या कहानी संग्रह` में `मरण सागर पारे` इस संस्मरण में शिवानी ने अपनी दूर के रिश्ते की ननद `बसंती दीदी` का वर्णन करते हुए कहा है कि `उनकी आँखों के सम्मुख कितनी ही मौते हुईं । वे मौत की आहट को भी पहचान लेते थी ।` इसी बसंतीदीदी के पास लेखिका अपने अस्वस्थ पति को लेकर गयी थीं । अन्त में उनसे विदा लेने के पूर्व तीन दिन बसंतीदीदी ने उनको दिव्य दृष्टि से कहा कि सब कह तो रहे हैं, यह ठीक हो गया है, पर मुझे ठीक नहीं लग रहा है । कैसा चन्दन-सा रंग था इसका, और देखती नहीं, एकदम काला पड़कर रह गया है । जब ऐसे गोरे रंग पर ऐसी स्याही पुतती है,तो समझ ले ...`[२]

बसंती दीदी की भविष्य वाणी सच निकली, थोड़े ही दिनों में शिवानी के पति की मृत्यु हो गई ।

`कृष्णवेणी` नामक लघु उपन्यास में शिवानी की शान्तिनिकेतन की एक तमिल सहेली तथा सहपाठी `कृष्णवेणी` १९४१ के बाद १९८० में मद्रास में लेखिका से मिलती है । वह लेखिका को देखकर कहती है ...

---

१ जालक - शिवानी - पृ.सं.१९० ।

२ रथ्या - मरण सागर पारे - शिवानी - पृ.सं.११९ ।

पहले जब मैंने तुझे देखा, तो तेरे ललाट पर वही परिचित बड़ा-सा टीका था, जिसकी मैं हँसी उड़ाया करती थी, कि क्या चवन्नी से टीका लगाती है। तेरे हाथों में रंगीन चूड़ियाँ थीं, चेहरे पर थी परम तृप्ति की विजयी मुस्कान, जैसे तू मुझसे कह रही थी — देख जीवन में विजय ही विजय मिली है मुझे। फिर वर्षों बाद, मैंने एक दिन तेरी यह पराजय भी देख ली। तेरा शून्य ललाट, तेरी रिक्त दृष्टि, पर फिर भी मैंने सोचा कितनी भाग्यवान है तू, तूने कुछ पाकर तो खोया है। एक मैं हूँ कि इस पृथ्वी पर सब-कुछ खोकर भी कुछ नहीं पा सकी।" [१]

"कृष्णवेणी" ने अपनी दिव्य दृष्टि से जो देखा था, वह शिवानी के बारे में सही निकला।

परिवार —

शिवानी के दो पुत्रियाँ और एक पुत्र है। उनकी पुत्रियों में मृणाल पांडे जी (आधुनिक काल की उभरती हुई लेखिका है। इनका जन्म १९४६ में हुआ। वे दिल्ली के "जीझस ऍण्ड मेरी कॉलिज" में अंग्रेजी की प्राध्यापिका भी है। वे मध्य प्रदेश के विभिन्न कॉलिज में और फिर यूरोप तथा अमेरिका में भी पढ़ा चुकी है। इनके पति हवाई के ईस्ट-वेस्ट सेण्टर में है। आज कल टी.वी. पर भी दिखाई देती है। राजनीति में गहरी रुचि रखती है।

शिवानी का व्यक्तित्व —

श्रीमती गौरा पन्त "शिवानी" को जो कोई एक बार देखता है तो उसे उनके माथे की बड़ी-सी बिन्दी याद रह जाती है। विश्व में भारतीय नारी की पहचान "बिंदी" है। शिवानी के ललाट पर चवन्नी-सा बड़ा सा टीका रहता था। सिर्फ बिन्दी ही नहीं (अपितु संपूर्ण व्यक्तित्व आम घरेलू भारतीय नारी का एहसास दिलाती है। उन्हें देख कर ऐसा नहीं लगता कि वे प्रसिध्द लेखिका है। किसी भी भारतीय घर में आने वाली बहन अथवा सहज मित्रता करने

---

१ कृष्णवेणी - शिवानी - पृ.सं.१३।

योग्य संवेदनशीला नारी अधिक लगती है। महिला कहानी लेखिकाओं को देखने और उन्हें एक विशिष्ट रुप में स्वीकार करने की आदत के फलस्वरुप शिवानी जी कहानी लेखिका उतनी नजर नहीं आती, जितनी घरेलू स्त्री।

प्रथम कृति (लेखन - कार्य का आरंभ) --

शिवानी के घर में प्रत्येक व्यक्ति पढने के पीछे दीवाना था, यहाँ तक कि उनके बूढे नौकर लोहनी जी को भी बिना पढे नींद नहीं आती थी। शिवानी नवमीं-दसवीं कक्षा में थी तभी 'विश्वभारती' पत्रिका में लिखने लगी थी। तब छोटी-छोटी घरेलू बातें लिखती थीं। ग्यारह वर्ष की उम्र में पहली कहानी लिखी - 'सिन्दूरी' जो बंगला पत्रिका 'नटखट' में छपी।

पहली हिन्दी कहानी 'जमीन्दार की मृत्यु' १९५१ में धर्मयुग में छपी थी। शिवानी ने जब लिखना शुरु किया तब एक कहानी पढने पर आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी जी की प्रतिक्रिया कुछ इस प्रकार हुई थी -- 'कई वर्ष पहले की बात है। मैंने शिवानी की एक कहानी कहीं पढी। आज न तो उस पत्रिका का नाम याद है, न उस कहानी का पूरा स्मरण है। कहानी केवल अस्पष्ट स्मृति रह गई है। इसमें आधुनिक शिक्षाप्राप्त बीवियों के कृत्रिम जीवन का चित्रण था। प्रच्छन्न रुप से इस कृत्रिम जीवन पर व्यंग्य था। मैं कहानी पढ कर प्रभावित हुआ था। लेखिका में अद्भुत सूक्ष्म दृष्टि थी और भाषा में विचित्र सहज भाव था। परन्तु मैं सबसे अधिक प्रभावित हुआ था लेखिका की स्वच्छंद सहज प्रकाशन-भंगिमा और अनुक्त बात को साहस के साथ कहने की क्षमता से। मैं लेखिका के संबंध में अधिक जानने को उत्सुक हुआ, फिर भूल गया। उसी के आसपास मन्नू भण्डारी की कुछ कहानियाँ भी पढने को मिलीं।' [१]

---

१ लाल हवेली - शिवानी (भूमिका में) आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी।

एक अच्छा कहानी लेखक बनने से पहले अनिवार्य है एक अच्छा कहानी-पाठक बनना। शिवानी बहुत पढ़ती थीं और आज भी पढ़ती हैं - प्रेमचन्द को, टैगोर को, मैक्सिम् गोर्की को। उनके समकालीन महिला लेखिकाओं में से मन्नू भण्डारी और इस्मत चुगताई उन्हें शुरू से ही प्रिय हैं। मंजुल भगत, बिन्दू सिन्हा भी अच्छी लगती है।

लखनऊ के आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में भी वे भाग लेती रही हैं। इसके साथ ही प्राय: हैदराबाद के तेलगु लेखिका सम्मेलन में अध्यक्षता के लिए आमंत्रित होती रहती हैं। देश के अन्य क्षेत्रों में भी उन्हें पर्याप्त सम्मान मिला है।

<u>पुरस्कार और सम्मान</u> —

साहित्य सेवाओं के लिए शिवानी को भारत सरकार ने पद्मश्री की उपाधि से अलंकृत किया।

<u>पुरस्कार</u> —

राज्य सरकार ने उनके संस्मरण 'वातायन' को 'रामचन्द्र शुक्ल' पुरस्कार से सम्मानित किया है। वे विगत कुछ वर्षों से हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में संस्मरण नियमित रूप से लिखती रही हैं। संस्मरण लेखक के क्षेत्र में उन्होंने पाठकों का अनन्य स्नेह एवं प्रचुर प्रशंसा प्राप्त की है। शिवानी ने संस्कृति, भाषा, कला, अभिनय, यात्रा, सामाजिक समस्या आदि पर खूब जम कर लिखा है। इस बात के प्रमाण 'वातायन', 'गवाक्ष', 'जालक' आदि निबन्ध-संग्रह हैं।

<u>प्रतिभा</u> (विविध भाषाओं का ज्ञान) —

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सान्निध्य में नौ वर्ष तक शान्तिनिकेतन में शिवानी ने शिक्षा पाई, इसको हम जान चुके हैं। इसी कारण शिवानी की रचनाओं में गुरुदेव का प्रभाव परिलक्षित होता है। दार्शनिकता और सांस्कृतिक दृष्टिकोण रचनाधर्मिता के अंतर्गत गुरुदेव की ही देन है।

शिवानी की लेखन क्षमता एवं लोकप्रियता का रहस्य उनका बहु-भाषा ज्ञान है। ईश्वर की असीम अनुकम्पा से उन्हें बचपन से ही कतिपय भाषाएँ सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुजराती, बंगला, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाएँ वे पढ़ती भी है, इन्हें लिखती भी है और इन्हें बोल भी सकती है। उनकी कथा-यात्रा अबतक जो वैविध्यपूर्ण रही तो उसका कारण भी संभवत: यही है कि उनकी लेखनी को इन्ही विविध भाषाओं के ज्ञान ने गतिशील बनाया है।

शिवानी ने अपनी इस भाषा-बहुज्ञता को अपनी सफलता का रहस्य बतलाते हुए लिखा है ' मैंने बंगला के अनेक सुहावने मुहावरों से अपनी कहानियों को संवारा है। गुजराती की पाणेतर, बुन्देलखण्ड की कैंकरेजी, कुमायूं की मक्खीबेल तथा सोलह पाटों का लहराता लहंगा, बंगाल के लालपाड की गरद, सबकी विभिन्न छटाओं से अपने पाठकों को मोहने की चेष्टा मैंने की है। [१]

प्रतिमा —

शिवानी की प्रशंसा में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है —' गौरा, शान्तिनिकेतन की छोटी-सी मुन्नी, मेरी परमप्रिय बहन और छात्रा। गौरा ही शिवानी के नाम से ऐसी कहानी लिखने लगी है। बचपन में ही वह बड़ी सूक्ष्म बुद्धि की थी, उसकी दृष्टि बड़ी पैनी थी। कभी-कभी वह ऐसी पते की बात कह जाती कि हम लोग हँस पड़ते थे। मेरे परम पारखी मित्र और गौरा के दूसरे अध्यापक पं. निताई विनोद गोस्वामी कहा करते थे कि यह लड़की अवसर मिलने पर बहुत प्रतिभाशालिनी सिध्द होगी। वे गौरा की भाषा और प्रकाशन-भंगिमा को तभी बहुत दाद देते थे, पर अफसोस के साथ अन्त में कहा करते थे, कि हमारे देश में लड़कियों को अवसर ही कहाँ मिलता है। मुझे गौरा की कहानियाँ को पढ़कर लगा कि गोसाईंजी की भविष्यवाणी सफल सिध्द होने जा रही है।' [२]

---

१ जालक - शिवानी - पृ.सं.१५१।

२ लाल हवेली - शिवानी - भूमिका - आ.हजारीप्रसाद द्विवेदी - पृ.सं.

इस तरह शान्तिनिकेतन में ही गौरा में कारयित्री प्रतिमा के दर्शन हुए थे।

घुमक्कड़ --

शिवानी की असाधारण सफलता का रहस्य उनकी बहुभाषाविज्ञता और बहुज्ञता है। यही बहुज्ञता उनको अन्य लेखकों से अलग, विशिष्ट बना देती है। वे जीवन में बहुत घूमी फिरी। भारत के विभिन्न क्षेत्रों को उन्होंने खुली आँख से देखा। सूक्ष्म दृष्टि से देखने की क्षमता उनमें विद्यमान है। भाषा पर भी उन्हें अधिकार है, जिसके माध्यम से अपने हृदयगत भावों को वे ज्यों-का-त्यों प्रकट कर सकती हैं।

शिवानी की भाषा संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी सहज और प्रवाहमय होती है। निश्चय ही यह कहा जा सकता है कि शिवानी की सभी रचनाएँ उनकी अलग पहचान बनती हैं।

किसी भी कलाकार की लोकप्रियता के मूल में दो ही कारण दिखायी देते हैं -- एक तो वह छिछोरेपन को अभिव्यक्ति दे या फिर वह जनसामान्य की संवेदना से जुड़े। शिवानी जी की कहानियों तथा उपन्यासों के सभी पात्र यथार्थ की जमीन पर खड़े हैं। उनमें भावनात्मक अपील है जिसके कारण शिवानी जी समकालीन कहानी लेखकों को कई गुना पीछे छोड़ आयी है।

शिवानी के मतानुसार पुरुष की अपेक्षा नारी के लेखन-कार्य में अधिक बाधाएँ आती रहती हैं -- एक ही हाथ से चिमटा और लेखनी पकड़ना बहुत सुगम नहीं है। इन कठिनायों के बावजूद भी शिवानी सफल लेखिका बन पाई है।

कृतित्व --

लेखक तीन प्रकार के होते हैं -- एक वे जिनका कृतित्व महान होता है किन्तु व्यक्तित्व गौण, दूसरे वे जिनका व्यक्तित्व महान होता है, किन्तु कृतित्व गौण होता है। तीसरे वे जिनका व्यक्तित्व भी महान होता है और कृतित्व भी। शिवानी की गणना तीसरे प्रकार के कृतिकारों में की जानी चाहिए।

शिवानी ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी कलम चलाई है।

शिवानी का रचना - संसार --

(क) उपन्यास --

१ मायापुरी	-	१९५७
२ चौदह फेरे	-	१९६०
३ कृष्णकली	-	१९६२
४ भैरवी	-	१९६९
५ श्मशान चम्पा	-	१९७२
६ सुरंगमा	-	१९७९।

(ख) छोटे उपन्यास तथा अन्य कहानियाँ ---

१ कैंजा	-	१९७५
२ विषकन्या	-	१९७७
३ रतिविलाप	-	१९७७
४ माणिक	-	१९७७
५ रथ्या	-	१९७७
६ गैन्डा	-	१९७८
७ किशनुली	-	१९७९।

(ग) कहानी - संग्रह --

१ लाल हवेली	-	१९६५
२ पुष्पहार	-	१९७५
३ उपहार	-	(अप्राप्य)
४ मेरी प्रिय कहानियाँ	-	१९७४
५ स्वयं सिध्दा	-	
६ गैंडा	-	१९८६ तृतीय संस्करण
७ माणिक	-	१९८६

८ चिर स्वयंवरा - १९८९

९ करिए छिमा - १९८९

१० फूलोंवाली -

(घ) रिपोर्ताज --

१ अपराधिनी - १९७४

(ङ) संस्मरण --

१ चार दिन की

२ आमादेर शान्तिनिकेतन

३ बिन्दु

(च) निबन्ध - संग्रह --

१ वातायन

२ गवाक्ष

३ दरीबा

४ झरोखा

५ जालक

६ झरुखा

(छ) बाल-साहित्य --

१ अलविदा हर हर गंगे

२ राधिकारानी

३ स्वामिभक्त चूहा ।

(ज़) <u>विविध</u> --

१) ` गुरुदेव और उनका आश्रम `

२) ` कुमाउं की जंगल कथाएँ `

३) ` कुमाऊं की पक्षी कथाएँ `

(झ) धर्मयुग अक्तूबर १९९० में छपी कहानी ` चांचरी `

इनके अतिरिक्त रेडियो के लिए अनेक नाटक, रिपोर्ताज आदि।

पता : ६६, गुलिस्तां कालोनी, लखनऊ।

••

निष्कर्ष

हिन्दी के अधुनातन कहानी लेखकों में शिवानी जी अग्रगण्य हैं। वे एक अत्यन्त सुरुचि संपन्न एवं सहृदय लेखिका हैं। शिवानी की कहानियों को पढने पर हमारे मन में लेखिका का एक विशिष्ट रुप उभरता है, तब मन में यह जिज्ञासा जागृत होती है कि क्या वास्तव में लेखिका का रुप ऐसा ही है। नारी-मन तथा उसकी अनंत पर्ते उघाडने की जबरदस्त कोशिश जिस नारी ने की है, उसका व्यक्तित्व कैसा है, यह जानने के हेतु प्रथम अध्याय में उनके व्यक्तित्व तथा रचना संसार की निम्न संक्षिप्त झलक प्रस्तुत है --

१) शिवानी का जन्म १९२३ ई.को राजकोट में हुआ। उनका वास्तविक नाम 'गौरा पन्त' है, वे कुमाऊँ निवासिनी हैं।

२) शिक्षक तथा दीवान पिता के साथ भारत के सभी प्रदेशों में रहने व घूमने का अवसर मिला। शिवानी के माता-पिता,नाना-नानी,पितामह सब सुसंस्कृत पढे-लिखे,उच्चवर्ग के थे।

३) शिवानी का बचपन रियासती वातावरण के कारण बडे ऐशो आराम में बीता। प्रारंभिक शिक्षा अल्मोडा में धर्मप्राण पितामह के शिक्षा प्रणाली के अनुरुप हुई। संस्कृत,भाषा का गहरा अध्ययन किया। पहाडी परिवेश का सूक्ष्म निरीक्षण,उसके प्रति अनन्य प्रेम इस वास्तव में हुआ।

४) बारह वर्ष की उम्र में अन्य भाई बहनों के साथ शिवानी को भी शान्तिनिकेतन में विधिवत् विद्याभ्यास के लिए भेजा गया। नौ वर्ष तक गुरुदेव की छत्रछाया में पढने के बाद कलकत्ता विश्वविद्यालय से विशेष सम्मानसहित बी.ए.किया।

५) शिवानी जब बी.ए.में थी,तभी उनका विवाह हुआ। शिवानी और श्रीयुत पन्त का वैवाहिक जीवन अत्यंत सफल रहा। श्रीयुत पन्त एक उच्च पदाधिकारी थे। कुछ वर्ष पूर्व उनका देहांत हो गया। शिवानी के दो पुत्रियाँ तथा एक पुत्र है। उनकी पुत्री मृणाल पाण्डे आधुनिककाल की उभरती हुई लेखिका है। राजनीति में गहरी रुचि रखती है,तथा टी.वी. पर दिखाई देती है।

६) शिवानी जी आकाशवाणी प्रोग्राम एडवाइजरी की सदस्या हैं। स्वतंत्र लेखन करती हैं।

लेखन कार्य --

१) शिवानी नवीं-दसवीं कक्षा में थी तभी 'विश्वभारती' पत्रिका में लिखने लगीं। ग्यारह वर्ष की उम्र कहानी (बंगला में) लिखी। पहली हिन्दी कहानी 'जमीनदार की मृत्यु' १९५१ में धर्मयुग में छपी। तबसे आज तक निरंतर लिखती आ रही है।

२) शिवानी के प्रिय लेखकों में प्रेमचन्द ,टैगोर,इस्मत चुगताई तथा मन्नू भण्डारी है।

३) साहित्य सेवाओं के लिए शिवानी को भारत सरकारने 'पद्मश्री' की उपाधि से अलंकृत किया है। साथ ही उनके संस्मरण 'वातायन' को रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार प्राप्त हुआ है वह हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में संस्मरण नियमित रूप से लिखती हैं

४) शिवानी की लोकप्रियता का रहस्य उनका बहुभाषा ज्ञान है। अंग्रेजी, हिन्दी,संस्कृत,बंगला,गुजराती भाषाएँ शिवानी पढ़-लिख सकती हैं। उनकी असाधारण सफलता का रहस्य बहुभाषाविज्ञता और बहुज्ञता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों को उन्होंने खुली आँख से देखा है।

५) हिन्दी साहित्य जगत् में शिवानीजीने ( ) अपना एक विशेष स्थान बना लिया है, वह शान्तिनिकेतन की ही देन है।

६) शिवानी ने उपन्यास कहानी संग्रह, रिपोर्ताज,संस्मरण,निबंध,बाल-साहित्य आदि के अतिरिक्त विविध साहित्य की सृष्टि की है।

७) कहानी,उपन्यास,संस्मरण,रेखाचित्र,यात्रावृतांत से संबंधित अनेक पुस्तकों की लेखिका शिवानी इधर समकालीन समाज और राजनीति पर सशक्त ढंग से लिख रही हैं।

८) शिवानी के व्यक्तित्व और कृतित्व को देख कर हम कह सकते हैं कि उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों ही महान हैं। उनकी कृतियों में स्त्री-पुरुषों का प्रेम,रोमांस और नारी जीवन की विभिन्न समस्याएँ उद्घाटित होती है।